Subject :- Sociology Date :- 09/05/2020
Class :- D-I (H) Paper :- 2nd
Topic :- Herbert Spencer का उद्विकासीय सिद्धान्त
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College, Darbhanga
online study Material No :- (12)

स्पेन्सर का उद्विकासीय सिद्धान्त

Herbert Spencer द्वारा प्रतिपादित सामाजिक उद्विकास का सिद्धान्त समाजशास्त्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस सिद्धान्त के अनुसार सामाजिक उद्विकास भी प्राणीशास्त्रीय उद्विकास की तरह भौतिक उद्विकास पर आधारित है। भौतिक उद्विकास की भाँति ही सामाजिक उद्विकास हुआ है। Spencer ने स्पष्ट किया है कि सामाजिक उद्विकास भी सरल से जटिल की ओर हुआ है।

Herbert Spencer द्वारा प्रतिपादित सामाजिक उद्विकास का सिद्धान्त निम्न तथ्यों पर आधारित है :-

सरल से जटिल का सिद्धान्त :- Spencer के सिद्धान्त का आधार यह है कि समाज का विकास सरल से जटिल की ओर हुआ है। सभ्यता के प्रारंभ में समाज अत्यंत सरल था किन्तु जैसे-जैसे इसका विकास होता गया इसमें जटिलता आती गयी। Spencer ने अपने इस कथन को निम्न उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट किया है - विकास की प्रारंभिक अवस्था में व्यक्ति में रक्त और परिवार की समानता थी। समाज के विकास के साथ क्रमशः यह समाप्त होती गयी और व्यक्तियों का विभाजन परिवारों, समूहों तथा रक्त सम्बन्धों में हो गया। इसी प्रकार सामाजिक उद्विकास के प्रथम चरण में जाति और वर्ग का अस्तित्व नहीं था किन्तु आधुनिक समाज अनेक जातियों, प्रजातियों और वर्गों में विभाजित है। प्रारंभ में विवाह जैसी कोई संस्था नहीं थी। यौन सम्बन्ध स्थापित करने की स्वतंत्रता थी। किन्तु सामाजिक उद्विकास के साथ-साथ विवाह रूपी संस्था का प्रादुर्भाव हुआ। इसी प्रकार उद्विकास की प्रारंभिक अवस्था में शासक और शासित सदृश्य कोई भेद नहीं था। सभी व्यक्ति समानता के आधार पर जीवन-यापन करते थे। किन्तु सामाजिक उद्विकास के साथ-साथ सरदार तथा राजा बने।

साथ ही साथ सामाजिक उद्विकास की प्रारंभिक अवस्था में

Scanned with CamScanner

श्रम-विभाजन का नामो निशान नही था। प्रत्येक व्यक्ति को अपना काम स्वयं करना पड़ता था। धीरे-धीरे समाज का यह स्वरूप समाप्त हो गया तथा श्रम-विभाजन का अस्तित्व स्वीकार किया गया। सामाजिक उद्‌विकास की प्रारंभिक अवस्था में संस्कृतियों में भी भिन्नता नही थी और न धर्म में ही भिन्नता थी। आधुनिक युग में समाज अनेक संस्कृतियों और धर्मों में विभाजित है।

जीवन संघर्ष का सिद्धान्त :- Spencer का कहना है कि जिस प्रकार जीवधारियों का विकास संघर्ष का ही परिणाम है, भौतिक उद्‌विकास की भाँति ही समाज का भी उद्‌विकास होता है। समाज में भी संतुलन पाया जाता है। समानता सामाजिक विकास का आधार है। प्रत्येक समाज एक-दूसरे का अनुकरण करता है। इस अनुकरण के कारण समाज का विकास होता है। Spencer के सामाजिक उद्‌विकास के सिद्धान्त में युद्ध को अनिवार्य मानते हुये इसकी विस्तृत विवेचना की गयी है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सामाजिक उद्‌विकास भी जीवन संघर्ष और अनुकूलता के कारण होता है।

Herbert Spencer द्वारा प्रतिपादित सामाजिक उद्‌विकास के सिद्धान्त के उपरोक्त नियम है।

S. N. Choudhary
Marwari college
L. N. M. U